Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2024: 8.058,
https://www.srjis.com/issues_data/235
PEER REVIEWED, REFEREED & INDEXED JOURNAL, JUNE-JULY 2024, VOL-12/64

संत कबीर दास के सामाजिक चेतना को आगे बढ़ाता भीष्म साहनी कृत नाटक "कबीरा खड़ा बाज़ार में"

सद्दाम हुसैन

पी-एच.डी., प्रदर्शनकारी कला(फिल्म और थिएटर), महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र, 442001. ई-मेल-shussain259@gmail lcom

Paper Received On: 21 June 2024
Peer Reviewed On: 25 July 2024
Published On: 01 August 2024

Abstract

संत कबीर दास भक्ति काल के महान सामाजिक कार्यकर्ता के रूप ख्याति प्राप्त की। उनके समय के काव्यधारा को ज्ञानमार्गी से जाना जाता है।। संत समाज में एकता को बनाये रखने के पक्षकारी रहे हैं। इन्ही महान पुरुषों पर समकालीन लेखकों ने रचनाकार समाज को अपनी विरासत को याद दिलाते रहे हैं।भीष्म साहनी ने अपने नाटकों में चार नाटकों मेंऐतिहासिकता एवं पौराणिक कथाओं का चित्रण कियाहै।प्रत्येक नाटक की कथावस्तु अलग-अलग होने केकारण हर एक कृति को पढ़ने का अपना अलग ही आनंद आताहै।उन्होंने इन कथानकों केमाध्यम से कहीं मिथकीय प्रयोग किएहैं।तो कहीं लोक नाट्य शैली का भी प्रयोग कियाहै।जैस माधवी या कबिरा खड़ा बाजार में इत्यादि।

प्रस्तावना

संत कबीर दास भक्ति काल के महान सामाजिक कार्यकर्ता के रूप ख्याति प्राप्त की। उनके समय के काव्यधारा को ज्ञानमार्गी से जाना जाता है।।संत समाज में एकता को बनाये रखने के पक्षकारी रहे हैं।इन्ही महान पुरुषों पर समकालीन लेखकों ने रचनाकार समाज को अपनी विरासत को याद दिलाते रहे हैं। भीषम साहनी द्वारा कबीर के जीवन को अधर बनाकर एक नाटक "कबीरा खड़ा बाज़ार में" लिखा गया जो निर्गुन काव्यधारा को रेखांकित करते हैं।

स्वयं भीष्म साहनी भी लिखते हैं। कि यह नाटक एक मानवीयस्थिति को मध्ययुगीन परिपेक्ष्य में प्रस्तुत करने का एक प्रयास मात्र है। इससेस्पष्ट होता है। कि भीष्म साहनी एक समाजाभिमुख साहित्यकार हैं। भीष्म साहनी कादूसरा नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' है। यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसनाटक में कबीर के जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को लेकर एक अलग अंदाज में नाटकलिखा गया है। इस नाटक में जिस समाज का अंकन किया गया है। वह आज भी समाज काप्रतिनिधित्व करती है। आज के समाज में भी धार्मिक मुद्दों पर संघर्ष छिड़ जाता है।आज भी विरोधी शक्तियां ही महत्वपूर्ण होती हैं। इसे जब भीष्म ने अनुभव किया तोउन्होंने कबीर के

Copyright@2024 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

माध्यम से इसे व्यक्त करने का प्रयास किया और समाज के सामने रखा।इसमें वह काफी हद तक सफल भी हुए। एक अन्य नाटक 'माधवी'को गालव और माधवी को आधार बना कर एक पौराणिक कथा को लेकर नाटक की रचना की गयी है।इस नाटक में माधवी के माध्यम से दिखाया गया है। कि आधुनिक काल में भी स्त्री केप्रति पुरूष का व्यवहार अत्यंत क्रूर दिखायी देता है। अभी भी उसके शोषण और दमन केकिस्से आम हैं। वर्तमान समय में भी पुरूष वैसी ही सामंती मानसिकता का है। इस नाटकको भीष्म साहनी ने बड़े ही यथार्थ परक अंदाज में लिखा है। उन्होंने स्वयं अपनेपरिवार में नारी को शोषित होते देखा हैपीड़ित होते देखा।

भीष्म साहनी का एक और नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' कबीर के मूल्यांवान व्यक्तित्व को चित्रित करने वाली नाट्यरचना है। कबीर की समन्वयवादी दृष्टि का दर्शन यहां होता है। यह नाटक लगभग सौ पृश्ठों का है। इसमें तीन अंक और सात दृष्य हैं। सम्पूर्ण नाटक कबीर के जीवन में घटित कुछ-कुछ घटनाओं पर आधारित है।

इसी प्रकार अन्य नाटकों को भी देखा जा सकता है। इसी प्रकार भीष्म साहनी ने अपने नाटकों में चार नाटकों में ऐतिहासिकता एवं पौराणिक कथाओं का चित्रण किया है। केवल 'माधवी' नाटक ऐसा नाटक है। जो मिथक पर आधारित है। अन्य तीनों नाटक कबिरा खड़ा बाजार में, रंग दे बसंती चोला, और आलमगीर में ऐतिहासिक कथावस्तु को आधार बनाया गया है। ऐतिहासिक नाटक अत्यधिक सजीव बनाने का प्रयास किया गया हैं।

लोकनाट्य शैली में भी भीष्म साहनी ने नाटक लिखे हैं। इनके नाटकों में लोकनाट्य शैली के बारे में डॉ। सत्यवती लिखती हैं।-''भीष्म साहनी का हनूश एक लोक कथा पर आधारित सामाजिक यथार्थ का नाटक है। अपने दूसरे नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' उन्होंने कबीर के जीवन चित्रण के द्धारा समाज में व्याप्त छद्म और पाखंड पर प्रहार किया है। "।

अपने नाटकों में भीष्म साहनी वस्तुन्यिास का प्रयोग कर नए-नए कथानकों को सामने लाते हैं। कहीं तो वह सुनी-सुनायी घटनाओं पर नाटक लिखते हैं। तो कहीं वे ऐतिहासिक अथवा पौराणिक कथाओं पर नाटक की रचना कर देते हैं। प्रत्येक नाटक की कथावस्तु अलग-अलग होने के कारण हर एक कृति को पढ़ने का अपना अलग ही आनंद आता है। उन्होंने इन कथानकों के माध्यम से कहीं मिथकीय प्रयोग किए हैं। तो कहीं लोक नाट्य शैली का भी प्रयोग किया है। जैस माधवी या कबिरा खड़ा बाजार में इत्यादि।

भीष्म साहनी का यह नाटक न केवल कलाकार की यातना और पीड़ा को चित्रित करता है। बल्कि पिछड़े वर्ग की यातनाओं को भी दर्शाता है। इस संदर्भ में डॉ। रामदरस मिश्र का कथन है।-''हिंदी नाटकों के अभिजात्य को तोड कर उन्हें जन-सामान्य से जोड़ने के जो प्रयत्न हुए हैं। उनमें भीष्म जी का काफी योगदान है।''

इसी प्रकार नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में'मध्य युग में व्याप्त धार्मिक संकीर्णता, शासकों का अन्यायपूर्ण व्यवहार, युगीन सामाजिक सड़ी-गली रूढ़ियां, साम्प्रददयियिक वैमनस्य जैसे अति महत्वपूण प्रश्नों को उठाया है। वर्तमान संदर्भ में उसकी संगत बिठाते हुए समकालीन, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक स्थितियों और समस्याओं का अत्यंत मार्मिक चित्रण है। राजकुमार सैनी के शब्दों में-''भीष्म साहनी का यह नाटक समाज के फलक और व्यक्ति के मन में चल रहे द्वंद्धों और अंतर्विरोधों की कलात्मक और अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति का एक सषक्त और बेहद प्रासंगिक दस्तावेज है।"

कोई भी साहित्य हो उसमें उल्लिखित मिथक का अपना ही महत्व होता है। लगभग सभी भाषा के साहित्य में और सभी साहित्यकारों द्वारा मिथकों को अपने साहित्य में जगह दी गयी है। हिंदी साहित्य में भी यह परंपरा रही है। शुरू से ही इसमें पौराणिक कथाओं को आधार बना कर कथाएं लिखने की परंपरा रही है। यह पौराणिक कथाएं रचनाकारों की प्रेरणस्रोत भी रही हैं। अब तक जाने कितने साहित्यकार व नाटककार इस विषय को अपनी रचनाओं का विषय बना चुके हैं।

वास्तव में मिथक स्वयं कल्पना पर आधारित होता है। वहीं उसमें सत्य का पुट भी दिखाई देता है। साहित्य में मिथकीय दृष्टिकोण पैदा करने के लिए याथार्थ की दृष्टि पैदा की जाती है। वहीं मिथकीय दृष्टि यथार्थ के चित्रण में सहायक होती है। मिथक में सत्य, यथार्थ और इतिहास तथ्य रूप् में नहीं वरन् तत्व रूप् में विद्यमान रहता है। मिथक और इतिहास को अलग करने वाले तत्व अत्यंत सूक्ष्म होते हैं। इसी कारण इन दोनों को अलग कर पाना अत्यंत कठिन होता है। मिथक में वर्णित सत्य मानव संवेदनाओं का सत्य होता है। भीष्म साहनी जी के नाटकों में तीन नाटक-कबिरा खड़ा बाजार में, रंग दे बसंती चोला और आलमगीर ऐतिहासिक मिथक पर आधारित है।'कबिरा खड़ा बाजार में' कबीरदास के जीवन पर प्रकाष डाला गया है। इस नाटक में कबीरदास जी के जीवन की अनेकानेक घटनाओं के संबंध में मिलने वाली किवंदंतियों एवं ऐतिहासिक तथ्यों को आधार बनाया गया है।

भीष्म साहनी ने भी इस विषय को अनदेखा नहीं किया बल्कि इसे आधार बना कर बड़ी-बड़ी रचनाएं कीं। भीष्म साहनी वैसे भी एक प्रयोगधर्मी नाटककार कहानीकार थे। उन्होंने नए-नए प्रयोग किए। सिर्फ प्रयोग पर ही वह नहीं रूके बल्कि नाटकों का सफल मंचन भी किया। इनमें उन्होंने मिथकों का प्रयोग भी किया है। मिथक की विशेषता यह है। कि मिथक यथार्थ को गहनता से जानने और व्यक्त करने के लिए अवसर प्रदान करता है। इसलिए वे एक दूसरे के विरोधी नहीं कहे जा सकते। वास्तव में मिथक अंग्रेजी के मिथ शब्द का हिंदी पर्याय है। सामान्यतौर पर इसका अर्थ यह माना जाता है। कि मिथक एक ऐसी परंपरागत कथा है। जिसका संबंध अतिप्राकृतिक घटनाओं और भावों से होता है। मिथक मूलतः आदिम मानव के समष्टि मन की सृष्टि है। जिसमें चेतन की अपेक्षा अचेतन प्रक्रिया का प्रधान्य रहता है।

मिथक और नाटक का गहरा संबंध है। प्राचीन काल में लगभग सभी देशों में खेले जाते थे। अंग्रेजी साहित्य में इसका काफी बोल बाला रहा। शेक्शपियर के नाटक तो विश्व विख्यात है। इसी प्रकार भारत में वेद, रामायण, महाभारत, पुराण आदि मिथकीय परंपरा के बड़े स्रोत कहे जा सकते हैं। इनमें देवकथाएं भरी पड़ी हैं। वास्तव में मिथक ही असल संस्कुति के वाहक हैं। राम, कृष्ण, शिव और पार्वती जैसे मिथक आज भी लोकप्रिय हैं। इस प्रकार हम देखते हैं। कि मिथक का साहित्य, धर्म, मनोविज्ञान, इतिहास, नाटक, समाज भाषा आदि से अत्यंत गहरा संबंध है। हम यहां इसी के आधार पर भीष्म साहनी के नाटकों की भी चर्चा कर सकते हैं। जो अत्यंत महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है। भीष्म साहनी एक ऐसे नाटककार हैं। जिनके नाटकों में बहुत सारी विविधताएं और विशेषताएं रही हैं।

भीष्म साहनी का मिथकीय दृष्टि से लिखा गया महत्वपूर्ण नाटक है।'कबिरा खड़ा बाजार में' है। वैसे तो भक्तिकाल के प्रसिद्ध निर्गुण परंपरा के संत कवि के जन्म, जीवन आदि के बारे में बहुत सी किंवदंतियों को आधार बना कर भीष्म साहनी ने यह नाटक लिखा है। इसमें उनके जीवन की घटनाएं, जिनके बारे में हमारे मन में संदेह है।, हमारे

सामने हो जाती हैं। हिदी साहित्य के आदय व्यंग्यकार कहलाने वाले कबीर के जीवन की विडम्बना है।, उनके जन्म आदि के बारे में मत-मतांतर रहे हैं। भीष्म साहनी ने कबीरदास का जन्म विधवा ब्रह्मणी से हो गया है। और वह उसे काशी के लहरतारा तालाब के किनारे छोड़ गयी थी। इसी किंवदंती को अपनाया है। भीष्म साहनी ने इस नाटक की भूमिका में लिखा है।"अपने काल के यथार्थ और उस यथार्थ के विरूद्ध उनके विकट संघर्ष को न दिखा कर कबीर को ब्रह्म में लीन आध्यात्म गायक संत रूप में दिखाना कबीर के साथ् अन्याय ही है। नाटक उनके काल की धर्मांधता, अनाचार, तानाशाही आदि के सामाजिक परिपे्रक्ष्य में उनके निर्भीक, सत्यान्वेषी, प्रखर व्यक्तित्व को दिखाने की कोशिश की है।"

1992 में लिखा गया यह नाटक हमारी परवर्ती राजनीति में सेमानो एक बानगी पेश करता है। भीष्म साहनी का यह नाटक एक चुनौती खड़ा करता है। उनकानाटक 'कबिरा खड़ा बाजार' में रंगकर्मियों के बीच हमेशा सेकाफी लोकप्रिय रहा है। वैसे तो कबीर सदैव ही हिंदी साहित्य और नाटकों के लिए एकप्रिय व्यक्तित्व रहे हैं। किंतु भीष्म साहनी के कबीर में एक अलग प्रकार कीविलक्षण सादगी है। इसी प्रकार लोई के चरित्र को भी उन्होंने प्रस्तुत किया है।नाटक में लोई की जिज्ञासाएं इतनी मासूम और दिलचस्प हैं। कि सुनने वाला सुनता ही रहजाए। भीष्म साहनी की साहित्यिक अभिव्यक्ति में भले ही कमी निकाली जा सकती हो लेकिनउनके यथार्थ में कोई और किसी प्रकार की कमी नहीं निकाली जा सकती। उनके कबीर नेअपने विचारों के लिए बहुत कुछ खोया और झेला है। उनको पानी में डुबोया गया, उनकाघर जला दिया गया, आदि। नाटक के कबीर सब कुछ झेलते हुए भी मानो यह जानतेहैं। कि उनकी साधारणतः ही उनकी वास्तविकता है। उनकी ख्याति और वास्तविकता को नाटक में बहुत ही सफलतापूर्वक और अच्छी तरह उद्यृत किया गया है। कबीर से कायस्थ कासंवाद कथानक में नाटकीयता के लिहाज से एक काफी ठोस स्थिति है। जो कबीर को छंद औरअलंकार सीखने की राय देता है। और कवि के रूप् में अच्छा कैरियर बनाने के लिएबड़े-बड़े लोगों से मिलने की सलाह देता है। नाटक में कबीर की छवि एक ओर म्यूजिकल कीसंभावनाएं लिए हुए हैं। तो दूसरी ओर उसे शहरी यथार्थवादी ढंग से मंचित भी किया जारहा है। भीष्म साहनी के रचनाक्रम में स्थितियों का विवरण काफी आराम से किया गयाहै। इनमें आधुनिकताओं का पुट तो है। ही वही यथार्थ की गहरी पकड़ भी है।

निष्कर्ष

भीष्म साहनी की रचनाओं में सामाजिक अंतर्विरोध साफमुखर होता है। राजनैतिक मतवाद तथा दलीयता के आरोप से दूर भीष्म साहनी ने भारतीयराजनीतिक में निरंतर बढ़ रहे भ्रष्टाचार, नेताओंका पाखंडपन, चुनावों की भ्रष्ट प्रणाली, राजनीतिमें धार्मिक भावन, साम्प्रदायिकता, जातिवादका दुरूप्योग, भाई-भतीजावाद, नैतिक मूल्योंका पतन, इत्यादि प्रवृत्तियों का चित्रध बड़े ही सजीव ढंग सेकिया है। जनवादी कथा आंदोलन के दौरान भीष्म साहनी ने सामान्य जन की आस, आकांक्षा, दुःख, पीड़ा, अभाव, संघर्षतथा विडंबनाओं को अपने नाटकों में दर्शाया